GRT
Golden Research Thoughts
ISSN: 2231-5063 Impact Factor : 4.6052(UIF) Volume - 6 | Issue - 6 | December - 2016

बुन्देलखण्डी लोकवाद्य एवं लोकगीत के सांगीतिक तत्व

डॉ. एकता डेंगरे

प्रस्तावना

बुन्देलखण्ड लोक संगीत विभिन्न प्रान्तों के ग्रामीण अंचलों में फैला हुआ है। बुन्देलखण्ड अपने लोकगीतों, लोकवाद्यों, तथा लोकनृत्यों के लिए प्रसिद्ध है। यहाँ के लोकगीतों, लोकनृत्यों में संगत देने तथा स्वतंत्र रूप से वादन के लिए लोकवाद्यों का प्रयोग किया जाता है। यहाँ के लोकजन सहज उपलब्ध वस्तुओं एवं उपेक्षित वस्तुओं से वाद्यों का निर्माण भी कर लेता है जैसे – गोल तुम्बे से एकतारा, वासों से वांसुरी व नरकुल, अलगोजा, आम की गुठली से पपीरी, ताड़ व बरगद के पत्तों से पिपहरी। यहाँ तक कि घरेलू वस्तुऐं जैसे – लोटा, थाली, सूप, चलनी, चिमटा, कटोरा, घड़ा, ताली, चुटकी आदि भी वाद्यों के रूप में उपयोग किये जाते है।

बुन्देलखण्ड के लोक जीवन में वाद्यों के दो मुख्य स्वरूप देखने को मिलते है। एक प्रकार वह है जिसमें मनुष्य की क्रियाऐं ही वाद्य का रूप धारण कर लेती है। जैसे – मूसल चलाने से उत्पन्न ध्वनि, इसे हम क्रिया वाद्य भी कह सकते है। दूसरे प्रकार के वाद्यों को वाद्यों के रूप में ही जाना जाता है जैसे – ढोलक, नगड़िया आदि।

लोक गायक स्वरों को सम बनाने, गीतों को तन्मयता से गाने, गायन के बीच सांस भरने (भराव) तथा श्रोताओं को मंत्रमुग्ध को मंत्रमुग्ध करने के लिए लोकवाद्यों का उपयोग करते है। लोक संगीत राग व ताल प्रधान न होकर लय व धुन प्रधान होता है। इसमें कोई शास्त्रीयता का बंधन नहीं होता है।

लोक वाद्यों को निम्न चार वर्गों को वर्गीकृत किया गया है –

1. तन्तुवाद्य-सारंगी, तम्बूरा, इकतारा, डुगडुगी, केंकड़िया आदि।
2. अवनद्य वाद्य – ढोलक, ढोल, डमरू, ढप, नगाडा आदि
3. घनवाद्य – झांझ, मंजीरा, घुंघरू, चिमटा, झींका आदि।
4. सुषिर वाद्य – शहनाई, बीन, शंख, रमतूला आदि।

बुन्देली लोकगीत अपनी मार्दव स्वर लहरियों, लयात्मक धुनों के आरोहावरोह तथा रंजक राग रागनियों के लिये प्रसिद्ध है। संगीत के सभी रूपों तथा बुन्देलखण्ड परम्परा से प्रचलित सभी प्रकार के लोकगीतों का सांगीतिक दृष्टि से समाहार हो गया है। बुन्देली लोकगीतों को सांगीतिक आधार पर मुख्य रूप से चार वर्गों में विभाजित किया गया है –

1. स्वर व राग के आधार पर लोकगीत।
2. लय व ताल के आधार पर लोकगीत।
3. धुन के आधार पर लोकगीत।
4. लोकनाट्य व लोकनृत्य पर आधारित लोकगीत।

स्वर व राग पर आधारित लोकगीतों को शुद्ध व विकृत स्वरों के आधार पर दो, तीन, चार, पॉच, छः व सात स्वरों के अन्तर्गत अलग-अलग विभाजित किया जाता है। लय प्रधान लोकगीतों को द्रुत, मध्य व विलम्बित लय के अन्तर्गत तथा ताल प्रधान लोकगीतों को लोकगीतों में प्राप्त मुख्य रूप से दादरा, खेमटा, कहरवा व चांचर दीपचंदी तालों के अन्तर्गत विभाजित किया गया है। धुन पर आधारित लोकगीतों को स्वर रचना के आधार पर पद रचना की बनावट के आधार पर तथा मात्रा प्रधान धुनों के आधार पर विभाजित किया जाता है। छः मात्रा दादरा, आठ मात्रा कहरवा तथा चौदह मात्रा दीपचंदी। दादरा व कहरवा के अन्तर्गत द्रुत व मध्य लय प्रधान धुनों पर आधारित लोकगीत तथा दीपचंदी के अन्तर्गत विलम्बित लय पर आधारित लोकगीत है। दादरा व कहरवा ताल तो है ही बुन्देलखण्ड में घर में पहली बार बहू के आगमन पर दादरे का बुलौवा लगवाया जाता है।

बुन्देलखण्ड के लोकगीतों के साथ बजने वाले लोकवाद्यों के बजाने में लय के विभिनन एवं विशेष भाव व्यक्त हुये है। लोकगीतों के कई गीत प्रकारों के साथ समान मात्राओं का तथा समान खण्डों पर निर्वाह होता है, तथापि गीत प्रकारों के वजन में अन्तर होने से वाद्य के बजाने में अन्तर आ जाता है। इस प्रकार बुन्देलखण्ड में भिन्न-भिन्न अवसरों पर विशिष्ट प्रकार की संगीतिक लोकधुनों वा लोकवाद्यों का प्रयोग होता है। जिससे दूर से ही सुनकर ज्ञात किया जा सकता है। कि कौन सा अवसर है व क्या गाया जा रहा है।